राजस्थान का प्रवेश द्वार भरतपुर पर्यटन का केन्द्र भरतपुर का किला

डॉ.देवेन्द्र सिंह सोलंकी डॉ.पुष्पलता सोलंकी

भरतपुर की स्थापत्य कला की शैली मुख्य रूप से प्रदर्शित होती उनके किलों में, हवेली या कोठी, स्मारक, और धार्मिक भवनों में। सभी भवन पूर्ण रूप से धर्मनिरपेक्ष है। डीग के भवन तथा लक्ष्मी कंज वृंदावन अपनी बनावट के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है।[1]

भरतपुर के दुर्ग व गढी

भारतवर्ष की भूमि प्रभावशाली दुर्गों से भरी पड़ी है। जहॉ से शासक अपना शासन चलाते थे तथा निम्नतम उन्हें अपने कौशल दिखाने के लिए बनाते थे। सभ्यता की शुरूआत से यह देखने में आया है कि मनुष्य ने अपनी सुरक्षा के लिए प्राकृतिक प्रकोप से बचने के लिए, जंगली जानवरों से सुरक्षा तथा अन्य प्रतिस्पर्धी के कारण इनका निर्माण किया था। परकोटे का निर्माण तथा अपनी बस्ती की आसपास किलेबंदी करना मानव का शुरूआती रचना है।

राजस्थान का दुर्ग स्थापत्य उत्कृष्ट उत्पादों से महिमा मंडित होकर देशी–विदेशी लोगों का, शोध को, इतिहासवेत्ताओं का आकर्षण का केन्द्र रहा है। राजाओं के दुर्ग स्थापत्य को देखकर कहीं–कहीं दुर्गो के शास्त्रीय विधान[2] तो की संस्कृति के अनूठे अनमोल खजाने का स्मरण हो आता है। ऋग्वेद में सबसे पहले इन दुर्गो का वर्णन किया गया है जो कि पत्थर से बनते थे।[3] अयस लोहे से या धातु से[4] सातभूज दुर्ग जिसमें 100 दिवार होती है।[5]

कौटिल्य ने दुर्गों का सात भागों में वर्गीकरण किया है। 1. नदी दुर्ग, 2. नदी संगम पर, 3. झील पर, 4. टापू पर, 5. मरूस्थल में, 6. जंगल में, 7. पहाड के शिखर पर। इन दुर्गों में गिरी दुर्ग को कौटिल्य सर्वश्रेष्ठ बताता है।[6]

राजस्थान के प्राचीनतम किलों में चित्तौड़ सर्वाधिक प्रसिद्ध है। चित्तौड़ राजस्थान की गौरव गरिमा का प्रतीक है। 12वीं शती का जैसलमेर दुर्ग भी प्रसिद्ध है। माण्डलगढ़, जालौर, सिवाना, भैसरोडगढ़ सभी 10वीं शताब्दी के है। नागौर, गागरोन, बयाना के दुर्ग 11वीं शताब्दी के है। रणथम्भौर

[1] अनिल कुमार – मोन्यूमेंट ऑफ भरतपुर – 32, अजिजूद्दीन हसन– शोध पत्र – हिस्ट्री एंड लाइफ ऑफ जाट राजाज ऐज रिफ्लेक्टेड इन हिस्टोरिकल मोन्यूमेंट ऑफ भरतपुर स्टेट – शोध पत्रिका – द जाट्स – भाग – । – 236 – 234, 235, 236, 237

[2] शुक्रनीति – चतुर्थ अध्याय–षष्ट प्रकरण– 324–326, कॉटिल्यकृत–अर्थशास्त्र : मानसोल्लास (215) मनुस्मृति अध्याय–7 श्लोक सं. 70–76, विष्णु धमोत्तर पुराण (2/26/2088) नीति वाक्यामृत (दुर्ग समुद्देश, प1. 199), यासवल्क्य स्मृति (1/231) आदि में दुर्गो का प्रकार दिया गया है।

[3] रिगवेद–।।–30.20, 35.6 उद्घृत – अनिल कुमार – मोन्यूमेंट ऑफ भरतपुर – 35

[4] ऋग्वेद – I-38.8, II – 20.8, IV – 27; 1, VII 3-7; 1.4 ; 95.1 उद्घृत – अनिल कुमार मोन्यूमेंट 36

[5] वही– 1 156.8, VII - 15.4

[6] कौटिल्य – अर्थशास्त्र – 7

संभवतः 8वीं शती में चौहानों ने बनाया था। कुम्भलगढ़, अचलगढ़, जोधपुर, बसंतगढ़, बीकानेर के दुर्ग 15वीं शती में बने।[7]

राजस्थान का दुर्गम दुर्ग भरतपुर 18वीं शताब्दी में बना यह चाणक्य द्वारा बताये गये मरूस्थल दुर्ग की श्रेणी में आता है। इसे ही धानवान दुर्ग भी कहा जाता है। भरतपुर के अलावा, कुम्हेर आदि इसी श्रेणी के दुर्ग है। भरतपुर के शासकों ने बहुत बड़े दुर्गो का निर्माण किया जहां उन्होंने मिट्टी के दुर्गों का निर्माण किया था। भरतपुर के शासक सूरजमल ने दुर्गों की एक महत्वपूर्ण समूह तैयार किया था। जाटों के प्रसिद्ध किलों की मरम्मत व निर्माण इनके पिता के शासन काल में किया गया था तथा स्वयं के द्वारा बनवाये गये। जो कि भरतपुर (1743–50 ई0), डीग, कुम्हेर, वैर, थून, सिनसिनी, सोंख, सोगर, सहर, कामां, अलवर, नोह, जबारा, खैर, रामगढ़ (अलीगढ़ का उपनाम), रामघाट, किशनगढ़, अडींग, खुर्जा आदि।[8]

सूरजमल एक महान भवन निर्माता था जैसा कि वैंदेल ने लिखा है कि उसने लाखों नहीं करोड़ों रूपये खर्च किये सुंदर व शानदार भरतपुर किलों को बनाने में, जो मैने हिंदुस्तान में अन्यत्र कहीं भी ऐसा कुछ नहीं देखा।[9] उसने सौंदर्य व भव्यता पर जोर न देकर उनकी सुरक्षा पर ज्यादा ध्यान दिया था। यह किले बहुत ही मजबूत हैं, जिसमें बहुत बड़ी मात्रा में सामान रखा जा सकता था मोरचना बंदी के समय मुख्य रूप से भरतपुर, डीग, कुम्हेर और वैर के किले यहां के निवासियों के प्रतिभा का परिचायक है। इनका मिट्टी का परकोटा, जो कि ईंटों से ढ़का गया है और पत्थरों से बनाया गया आवाम आश्चर्य रूप से डरावना है और चारों तरफ की खाई बहुत ही चौड़ी और गहरी है जिसे पानी से कूट–कूट के भरा जाता है। एक आरे परकोटा है जो कि शहर को घेरे हुए है[10] जो कि लगभग 2 से 3 कोस (6 से 9 कि. मी.)। इन किलों में तोपे रखी गयी है और यहां पर शस्त्र, चारा, भोजन सामग्री आदि इतनी मात्रा में रखी जा सकती है कि वह एक साल तक भी खत्म न हो। कुम्हेर व डीग के परकोटो पर भी तोपों की लाईन लगायी गयी है।[11]

इन दुर्गों के अलावा कुछ गढि (मिट्टी के किले) भी बनाये गये थे जो कि सोगर, करनोट, सौंख, पींजोरा, सेवर, दुहरा, उडैरा, चाबोरा, अवर, बच्छमंडी, चिकासना, रतनपुर, भटावली, अडींग, कसौट, झरोटी, रामसन, राजाखेडा, रारह, सासनी, टक्सन, सरौंठ आदि।[12]

[7] रतन लाल मिश्र – राजस्थान के दुर्ग – 15

[8] सुजान चरित्र 234 से 235, मेम्बोआर–दे–यात–103, 114, 129–130, 133, 135–136, 139, 140, 149, 150, 204, 206, 220 सोमनाथ रस पीयूष निधि – 6, 7

[9] मेम्बोआर–दे–यात–(हिन्दुस्तान में जाट सत्ता) 139–140

[10] वही 139–140

[11] सुजान चरित्र–245, यू.एन. शर्मा जाटों का नवीन इतिहास – 250–251, 52, 53

[12] द्विवेदी जाट्स – 5, 45, 47, 114, अनिल कुमार – मोन्यूमेंट – यू.एन. शर्मा इतिहास – 252

भरतपुर दुर्ग :

1733 ई0 में भरतपुर पर अधिकार कर लेने के बाद से ही सूरजमल ने इसे योजनाबद्ध तरीके से विकसित किया तथा इसे राजधानी और अभेध दुर्ग का निर्माण के लिए चुना। भरतपुर के इस किले का निर्माण 19 फरवरी 1733 ई. में सूरजमल द्वारा प्रारम्भ किया गया था।[13] किले का संपूर्ण निर्माण कार्य लगभग 8 वर्ष में पूरा हुआ था। किले के निर्माण से राज्य की राजनैतिक गतिविधियां अब डीग के स्थान पर भरतपुर से संचालित होने लगी। शास्त्रीय दृष्टि से भरतपुर का यह 'लोहागढ़' भूमिदुर्ग की श्रेणी में आता है।[14] इस दुर्ग से बनने से पूर्व इस स्थल पर बाणगंगा, रूपारेल एवं गंभीरी नदियों के पानी का संगम होता था। इसकी जल से भरी हुई विस्तृत खाई (परिखा) तथा बाहरी मिट्टी की विशाल प्राचीर इसके स्थापत्य का अनुपम अंग है। जिसमें जाट राजाओं की उत्कृष्ट सैन्य समझ के दर्शन होते है। तोपों की गोलाबारी भी किले को इस व्यवस्था के कारण कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाती थी। विमान के आविष्कार से पूर्व इसे जीत पाना प्रायः असम्भव था।[15]

आयताकार आकृति वाले इस दुर्ग का विस्तार 6.5 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में है। दो विशाल गोलाकार मिट्टी की दीवारें एक–दूसरे को घेर कर खड़ी की गई है। बीच में एक अत्यधिक चौडी 150–200 फीट और 20 से 50 फुट गहरी खाई (परिखा) जल से पूर्ण होकर दुर्ग को अभय रखती है। इस खाई में जल के प्रवेश एवं निकास के लिए उत्तर प्रबंध किया गया था। यह खाई या नाहर सुजान गंगा के नाम से प्रसिद्ध है।[16] इस खाई में पानी कोहनी बांध से आता है।[17]

भरतपुर के किले में प्रवेश के लिए उत्तर व दक्षिण में दो प्रवेश द्वार बनाए गए और खाई को पार करके उन तक पहुंचने के लिए पुल भी बनाए गए। इस किले के बाहरी भाग को चार भागों में विभक्त किया गया है जो गोपालगढ़, रामगढ़, किषनगढ़, फतहगढ़ नाम से प्रसिद्ध हुए। नगर की सुरक्षा के लिए चारों ओर 18 से 25 फीट चौड़े और 60 फुट ऊँचे मिट्टी के परकोटे का निर्माण करवाया गया ताकि शत्रु के तोपखाने (गोलों) मिट्टी में धंस जाए और मुख्य किल्प उनकी पहुंच से दूर रहें। ऐसा प्रतीत होता है कि महाराजा सूरजमल ने मानसार में वर्णित मानकों के अनुसार भरतपुर दुर्ग का निर्माण करवाया।[18] भरतपुर दुर्ग के सुदृढ़ परकोटे में आठ विशाल बुर्जे, 40 अर्धचन्द्रकार बुर्जे तथा दो विशाल दरवाजे है

[13] ऐसी मान्यता है कि इस दुर्ग का संस्थापक एवं निर्माण रूस्तम नामक एक जाट द्वारा करवाया गया था। सूरजमल ने इसे खेमकरन से लिया था फिर उसे नये सिरे से बनवाया। उसने शहर के चारों ओर मिट्टी की प्राचीर बनवाई। सन् 1733 ई0 से यह उसकी राजधानी के रूप में रही। इससे पूर्व रूस्तम से खेमकरन को जो गढी प्राप्त हुई उसे चौबूर्जा कहा जाता था। राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर भरतपुर 477–479

[14] सुजस : दुर्ग विशेषांक, अप्रैल–3ई 1998 ई. वर्ष 7, अंक 3–24–25 के मीणा का लेख–गोराहर गा रे राज भरतपुर को : सूचना एवं प्रकाशन विभाग राजस्थान सरकार, रत्नलाल : राजस्थान के दुर्ग – 133

[15] नटवर सिंह – सूरजमल – 46, अनिल कुमार वर्मा : मोन्यूमेंट – 27

[16] पी.सी. चांदावत – महाराजा सूरजमल – 237

[17] द जाट्स – शोध पत्रिका भाग–4–2013, प्रणव देव का लेख – भरतपुर के जाट राजाओं का दुर्ग स्थापत्य और पर्यटन – 226

[18] दीनानाथ दुबे – भारत के दुर्ग – 95, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।

इसमें से उत्तरी द्वार अष्ट धातु दरवाजा तथा दक्षिणी लोहिया दरवाजा कहलाता है।[19] इस दरवाजे को 1764 ई. में जवाहर सिंह द्वारा दिल्ली विजय के स्मारक के रूप में स्थापित किया गया था।[20] भरतपुर के शासकों के गद्दी पर बैठने का संस्कार इसी बुर्ज में किया जाता था। इसे पवित्र व मांगलिक माना जाता है।[21] अन्य बुर्जो में सिनसिनी बुर्ज, भैंसावाली बुर्ज उल्लेखनीय है। नगर में प्रवेश के लिए आठ दरवाजों का निर्माण किया था। यह मथुराथेल, चांदपोल, गोवर्धनलाल, जधीनापोल, सूरजपोल और दिल्ली दरवाजा, कुम्हेर गेट, वीर नारायण गेट है। इस किले के अंदर कई इमारतें उल्लेखनीय है। इसके भीतर रानी किशोरी महल, महलखास, कोठीखास, दादी का महता, वजीर की कोठी, सिपदरवाजा, लक्ष्मी रानी महल है।

इसके अंदर प्रशासनिक भवन था जहां दरबार सजा करता था जो कि दरबार–ए–खास व दरबार–ए–आम के नाम से जाना जाता था। वर्तमान में इसमें भरतपुर का संग्रहालय बना हुआ है। जिसमें शिलालेख, मूर्तियां, जाट शासकों के अस्त्र–शस्त्र एवं अन्य पुरामहत्व की सामग्री प्रदर्शित है। किले के अंदर ही भगवान कृष्ण के अलग–अलग नामों के मंदिर है जिनमें गोपाल मंदिर, मनमोहन जी, चतुर्भुज जी, दाउजी, रघुनाथ जी मंदिर प्रमुख है। हनुमान मंदिर भी बनाये गये है चूंकि भरतपुर बृज क्षेत्र में स्थित है इसलिए कृष्ण के मंदिर इस किले में जो कि इस किले की एक विशेषता है जो कि अन्य किसी भी किले में नहीं है।[22]

फरवरी 1805 को जब अंग्रेजों ने इस दुर्ग को घेर कर चार बार आक्रमण किया पर अपने 3000 सैनिक खोये[23] व 65 तोपें खराब हो गयी, ब्रिटिश अफसरों को मिली। इस असफलता का श्रेय इस दुर्ग के स्थापत्य तकनीक को ही जाता है। इस असफलता पर अंग्रेजों के टूटे मनोबल का आभास सर चार्ल्स मेटकाफ द्वारा गवर्नर जनरल को लिखे पत्र की इन पंक्तियों से मिलता है। ''ब्रिटिश फौजों की सैनिक प्रतिष्ठा का अधिकांश हिस्सा भरतपुर के दुर्भाग्यपूर्ण घेरे में दब गया है।[24]

भरतपुर भारतीय व विदेशी पर्यटको के लिए आकर्षण का केन्द्र है । भरतपुर भारत के स्वर्णिम त्रिभुज पर स्थित है। भारत आने वाला हर पर्यटक यहॉ की यात्रा भी जरूर करता है। यह दिल्ली से मुम्बई जाने वाले रेल द्वारा स्थित है तथा दिल्ली से 187 किमी की दूरी पर है। भारत के प्रमुख पर्यटन स्थल आगरा से यह 56किमी की दूरी पर है। यहॉ सडक मार्ग द्वारा भी पहुॅचा जा सकता है। जयपुर व आगरा यहॉ के निकटतम हवाई अड्डे है ।

[19] जनश्रुति है कि यह अष्टधातु दरवाजा पहले चित्तौड में लगा था जिसे अलाउद्दीन खिलजी अपने मेवाड अभियान के समय दिल्ली ले गया था। (राघवेन्द्र सिंह मनोहर , राजस्थान के प्रमुख दुर्ग – 69, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर – 1997

[20] राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर – भरतपुर – 479

[21] रतन लाल मिश्र : राजस्थान के दुर्ग – 159, साहित्यगार – जयपुर – 2008

[22] अनिल कुमार – मोन्यूमेंट – 45, पी.सी. चांदावत – महाराज सूरजमल – 237 सुजान चरित्र–245–246 में भी भरतपुर के जिले का वर्णन है।

[23] रिपोर्ट–फोरेन – डिपार्टमेंट 1872–73–153

[24] राधवेन्द्र सिंह मनोहर – राजस्थान के प्रमुख दुर्ग – 71

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अनिल कुमार – मोन्यूमेंट ऑफ भरतपुर – 32, अजिजूद्दीन हसन– शोध पत्र – हिस्ट्री एंड लाइफ ऑफ जाट राजाज ऐज रिफ्लेक्टेड इन हिस्टोरिकल मोन्यूमेंट ऑफ भरतपुर स्टेट – शोध पत्रिका – द जाट्स – भाग – । – 236 – 234, 235, 236, 237
2. शुक्रनीति – चतुर्थ अध्याय–षष्ट प्रकरण– 324–326, कॉटिल्यकृत–अर्थशास्त्र : मानसोल्लास (215) मनुस्मृति अध्याय–7 श्लोक सं. 70–76, विष्णु धमोत्तर पुराण (2/26/2088) नीति वाक्यामृत (दुर्ग समुद्देश, प1. 199), यासवल्क्य स्मृति (1/231) आदि में दुर्गो का प्रकार दिया गया है।
3. रिगवेद–।।–30.20, 35.6 उद्घृत – अनिल कुमार – मोन्यूमेंट ऑफ भरतपुर – 35
4. ऋग्वेद – I-38.8, II – 20.8, IV – 27; 1, VII 3-7; 1.4 ; 95.1 उद्घृत – अनिल कुमार मोन्यूमेंट 36
5. वही– 1 156.8, VII - 15.4
6. कौटिल्य – अर्थशास्त्र – 7
7. रतन लाल मिश्र – राजस्थान के दुर्ग – 15
8. सुजान चरित्र 234 से 235, मेम्बोआर–दे–यात–103, 114, 129–130, 133, 135–136, 139, 140, 149, 150, 204, 206, 220 सोमनाथ रस पीयूष निधि – 6, 7
9. मेम्बोआर–दे–यात–(हिन्दुस्तान में जाट सत्ता) 139–140
10. वही 139–140
11. सुजान चरित्र–245, यू.एन. शर्मा जाटों का नवीन इतिहास – 250–251, 52, 53
12. द्विवेदी जाट्स – 5, 45, 47, 114, अनिल कुमार – मोन्यूमेंट – यू.एन. शर्मा इतिहास – 252
13. ऐसी मान्यता है कि इस दुर्ग का संस्थापक एवं निर्माण रूस्तम नामक एक जाट द्वारा करवाया गया था। सूरजमल ने इसे खेमकरन से लिया था फिर उसे नये सिरे से बनवाया। उसने शहर के चारों ओर मिट्टी की प्राचीर बनवाई। सन् 1733 ई0 से यह उसकी राजधानी के रूप में रही। इससे पूर्व रूस्तम से खेमकरन को जो गढी प्राप्त हुई उसे चौबूर्जा कहा जाता था। राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर भरतपुर 477–479
14. सुजस : दुर्ग विशेषांक, अप्रैल–3ई 1998 ई. वर्ष 7, अंक 3–24–25 के मीणा का लेख–गोराहर गा रे राज भरतपुर को : सूचना एवं प्रकाशन विभाग राजस्थान सरकार, रत्नलाल : राजस्थान के दुर्ग – 133
15. नटवर सिंह – सूरजमल – 46, अनिल कुमार वर्मा : मोन्यूमेंट – 27
16. पी.सी. चांदावत – महाराजा सूरजमल – 237
17. द जाट्स – शोध पत्रिका भाग–4–2013, प्रणव देव का लेख – भरतपुर के जाट राजाओं का दुर्ग स्थापत्य और पर्यटन – 226
18. दीनानाथ दुबे – भारत के दुर्ग – 95, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
19. जनश्रुति है कि यह अष्टधातु दरवाजा पहले चित्तौड में लगा था जिसे अलाउद्दीन खिलजी अपने मेवाड अभियान के समय दिल्ली ले गया था। (राघवेन्द्र सिंह मनोहर , राजस्थान के प्रमुख दुर्ग – 69, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर – 1997
20. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर – भरतपुर – 479

21. रतन लाल मिश्र : राजस्थान के दुर्ग – 159, साहित्यगार – जयपुर – 2008
22. अनिल कुमार – मोन्यूमेंट – 45, पी.सी. चांदावत – महाराज सूरजमल – 237 सुजान चरित्र–245–246 में भी भरतपुर के जिले का वर्णन है।
23. रिपोर्ट–फोरेन – डिपार्टमेंट 1872–73–153
24. राधवेन्द्र सिंह मनोहर – राजस्थान के प्रमुख दुर्ग – 71

37 राम विहार कालोनी

सांगानेर जयपुर

मोबाइल 9314944477

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation